

SHRI TILAK GITAI

Shri Tilak Gitai is a painter, knowledgeable about various aspects of the paintings he has studied, and the schools that have conceptually commingled in original miniatures he himself has painted. Conscious of this heritage, Shri Gitai has made a detailed study of Interaction between miniature painting and classical Indian music. He has deep insight into various schools of miniature painting: Jaipur, Mewar, Marwar, Kota, Bundi, Kishangarh, Kangra, Basholi and Pahari Schools of painting.

2. Born on October 26, 1949 into a family of Court artists of the former Bikaner State, he has inherited an ambience of scholarship and fine arts. He has done his B.F.A. from the University of Delhi in 1974 after a three year degree course in art from the University of Rajasthan. He specializes in Indian Traditional Miniature paintings like Mughal, Rajasthani and Phadi paintings etc. He is also an all-round Master Craftsman.

3. Shri Gitai has done a great research and works on the ancient “Ragamala” paintings and added with his own imagination and creativity the missing portions to these paintings without which, in essence, these paintings were incomplete. He has been able, in his work, to establish the system of classifying Ragas of Indian classical music, Raginis and Raga paddhatis, with the system of using colors in pictures, appropriate for different parts of day; morning, afternoon, evening and night. He specialised in miniature paintings of all schools, sculptures in all media, metal engraving & embossing and various other crafts. Over the years, he has gained expertise in restoration of antique paintings.

4. The scholarly world of miniature painting recognises him as a master painter and scholar, with a lot of tradition and history within himself. He has participated, along with his paintings, in the "Festival of India" at Augsburg and Munich in 1985, and Geneva, Zurich, and Basel in 1987. His Ragamala paintings are displayed at several museums: D'enthnographic, Geneva; Victoria and Albert Museum, London; National Museum of Ethnology-Osaka; and the National Crafts Museum in New Delhi.

5. During his illustrious career Shri Gitai got many prizes and awards for his originality and artistic brilliance. He has been awarded National Award by the President of India Shri Gyani Zail Singh in year 1982 and Shilp Guru Award by the President of India Smt Pratibha Patil in year 2007. Besides this he has received Rajasthan Shiromani Award in year 1991; Kalamani Award at Suraj Kund in year1991; Maharana Sajjan Singh Award by Mewar Foundation of Udaipur in year 1992; India's Independence Golden Jubilee Award in year 1997; Federation of Rajasthan Handicrafts Exporters Award in year 2007; Indira Gandhi Priyadarshini Award in year 2008; Rajasthan Gaurav in year 2009; Maharaja Sawai Jagat Singh Award by City Palace Museum of Jaipur in year 2013.



श्री तिलक गीताई

श्री तिलक गीताई एक चित्रकार हैं एवं चित्रकारी की विभिन्न बारीकियों के ज्ञाता हैं। आप अपनी अवधारणापरक मूल लघु चित्रों को चित्रित करते हैं। इस विरासत के प्रति सजग रहते हुए आपने लघु चित्रकारी एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत के बीच के अंत: / संबंध का विस्तृत अध्ययन किया है। आपको लघु चित्रकारी के विभिन्न स्कूलों : जयपुर, मेवाड़, मारवाड़, कोटा, बूंदी, किशनगढ़, काँगडा, बशोली एवं चित्रकारी के पहाड़ी स्कूलों का पूर्ण अंतर्ज्ञान है।

2. आपका जन्म 26 अक्तूबर, 1949 में पूर्व बीकानेर राज्य के दरबारी कलाकारों के परिवार में हुआ था। आपको विद्वता एवं ललित कला का परिवेश विरासत में प्राप्त हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से त्रि-वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से वर्ष 1974 में ललित कला में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपने भारतीय परम्परागत लघु चित्रकारी जैसे – मुगल, राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकारियों आदि में विशेषज्ञता प्राप्त की है। आप निष्णात मास्टर क्राफ्ट्समैन भी हैं।

3. आपने 'रागमाला' नामक प्राचीन चित्रकारी पर एक महान अनुसंधान कार्य किया है तथा इन चित्रकारियों में विद्यमान कमियों को अपनी कल्पना तथा सृजनात्मकता से संपूरित किया है जिसके बिना वास्तव में ये चित्रकारी अधूरी थी। आप अपनी कृतियों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत, रागनियों और राग पद्धतियों के रागों के वर्गीकरण की प्रणाली की स्थापना करने तथा दिन के विभिन्न कालों यथा प्रात:काल, दोपहर, सन्ध्या एवं रात्रिकाल के लिए चित्रों में रंगों का उपयोग करते हुए उसके साथ समन्वय करने में सफल रहे हैं। आपको सभी स्कूलों की लघु चित्रकलाओं, सभी प्रकार की मूर्तिकलाओं, धातु पर नक्काशी एवं उत्तकीर्णन एवं विविध अन्य शिल्पों में विशेषज्ञता प्राप्त है। आपने वर्षों की अपनी साधना से पुरातन चित्रकला की पुन: स्थापना में विशेषज्ञता हासिल की है।

4. आपको लघु चित्रकला के विद्वत समाज में ऐसे सिद्धहस्त चित्रकार एवं विद्वान के रूप में ख्याति प्राप्त है, जिनके व्यक्तित्व में दीर्घ परंपरा एवं विशाल इतिहास समाहित है। आपने अपने चित्रों के साथ ऑग्सवर्ग एवं म्युनिच वर्ष 1985 में, जेनेवा, जुरिच और बसेल में वर्ष 1989 में आयोजित "भारत महोत्सव" में भाग लिया। आपकी रागमाला चित्रों की प्रदर्शनी 'डी एंथनोग्राफिक, जेनेवा; विक्टोरिया एवं अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन; नेशनल म्यूजियम ऑफ एथनोलोजी-ओसाका और नई दिल्ली में राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालयों में लगाई जाती है।

5. अपने उत्कृष्ट कैरियर के दौरान आपको अपनी मौलिकता एवं कलात्मक प्रतिभा के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्ष 1982 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह द्वारा आपको राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं वर्ष 2007 में भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा आपको शिल्प गुरू पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही, आपको वर्ष 1991 में राजस्थान शिरोमणि पुरस्कार; सूरजकुंड में वर्ष 1991 में कलामणि पुरस्कार; वर्ष 1992 में मेवाड़ फाउंडेशन ऑफ उदयपुर द्वारा महाराणा सज्जन सिंह अवार्ड; वर्ष 1997 में इंडियास इंडेपेंडेंस गोल्डन जुबली पुरस्कार; वर्ष 2008 में इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी पुरस्कार; वर्ष 2009 में राजस्थान गौरव; जयपुर के सीटी पैलेस संग्रहालय द्वारा वर्ष 2013 में महाराजा सवाई जगत सिंह अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।